मैथिली प्रतिष्ठा
B.A. पार्ट- 1

प्रकरण - विद्यापति

12-04-21

दोसर दिस क्रान्तिक आह्वान अछि। संस्कृत रचना द्वारा मिथिलाक परम्परानुसार वैदिक परम्पराक समपोषण क्रमसँ अवहट्ठ रचना द्वारा अपन इतिहास बोधक प्रकाश कयलनि। तथा मैथिली रचना द्वारा अपन सामाजिक चेतनाक संवाहन करैत क्रान्तिदर्शी दूरदर्शिताक परिचय दयलनि।

विद्यापति तत्कालीन समस्त राष्ट्रकेँ जोड़य बला संस्कृत भाषामे रचना करैत जतय एक दिस अपन राष्ट्रीय चेतनाक परिचय दयलनि अवहट्ठमे रचनाक, क्षेत्रीय तथा मैथिलीमे रचना करैत मिथिलाक मातृभाषामे उचित सम्यक् संतुलन स्थापनाक प्रेरणा दयलनि। तत्कालीन युगीन त्रिभाषा रूप संतुलन जे आइयो सम्पूर्ण भारत वर्ष लेल सर्वथा प्रासंगिक अछि।

भारतीय समाज एवं मैथिल समाज चौदहम शताब्दीमे संक्रमणकालसँ गुजरि रहल छल तेँ महाकवि भारतीय जन-जीवनक लेल सामान्यत: मिथिलाक लेल बौद्ध प्रभावसँ सुरक्षित रखबाक लेल विशेषत: संस्कृतमे कतेको वैदिक कर्म-काण्ड सम्बन्धी ग्रन्थक रचना करैत सन्यास विरोधी व्यापक शृंगार

शेष अगिला अंकमे